आभार – पुष्प

गुरूब्रह्मा गुरूविष्णु, गुरूदेवो महेश्वर:
गुरू: साक्षात पर ब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नम:

मैं सर्वप्रथम विघ्नविनाशक श्री गणेश को नमन् करती हूँ और अपना शोध प्रबन्ध विद्यादायिनी माँ सरस्वती एवं भगवान विष्णु के चरणों में समर्पित करती हूँ।

गुरू जो स्वयं में पूर्ण है, जो पूर्ण है वही तो पूर्णत्व की प्राप्ति दूसरों को करवा सकता है। गुरू हमारे जीवन में प्रकाश है, वही हमारे को सही राह पर ले जाते हैं। मैं अपने शोध प्रबंध का श्रेय अपनी मार्गदर्शिका परम् आदरणीय डॉ. (श्रीमती) सुनीता शर्मा, सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) को देना चाहती हूँ। उनकी प्रेरणा एवं सशक्त मार्गदर्शन के आभाव में इस कार्य को पूर्ण होना न केवल नितांत कठिन था वरन् असंभव ही था। शोध–ग्रंथ की मौलिक तथा सुस्पष्ट प्रस्तुती के लिए मैं अपने हृदयांतर से पूर्ण भावना के साथ उनकी हृदय से आभारी हूँ।

आभार अभिव्यक्ति के क्रम में मैं अपनी सहमार्गदर्शक परम् आदरणीय डॉ. (श्रीमती) ज्योति प्रसाद, पूर्व प्राचार्य, विजयाराजे शासकीय कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपने सुयोग्य एवं पांडित्यपूर्ण निर्देशन देकर मेरा जो मार्गदर्शन किया एवं अपने वात्सलयपूर्ण व्यवहार व अकथनीय सहयोग दिया, उसके लिये मैं हृदय से उन्हें कोटि–कोटि नमन् करती हूँ।

मैं शोध केन्द्र की प्राचार्या श्रद्धेय डॉ. (श्रीमती) प्रभा मेहता, शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ जिनका आर्शीवाद व सहयोग सदैव मेरे साथ रहा।

मैं श्रद्धेय डॉ. (श्रीमती) मंजु दुबे, विभगाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर की हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने समय–समय पर अपना आशीष व सहयोग देकर मुझे शोध कार्य हेतु प्रेरित किया व साथ ही अनन्य स्नेह प्रदान किया।

मैं श्री हरेन्द्र देव शर्मा जी हृदय से आभारी हूं जिन्होंने शोध प्रबंध के लिये मुझे तथ्य विश्लेषण में सहयोग प्रदान किया।

मेरे समस्त उत्तरदाताओं उनके प्रति भी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर शोध कार्य को प्रगति प्रदान कीं

मैं अपने पति श्री अनुज कुमार सिंह का आभार व्यक्त करती हूं जिनके कारण मेरे शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत रूप प्राप्त हुआ। मैं उनके विस्मरणीय सहयोग के लिए हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने पिता एवं माता आदरणीय श्री गनेश सिंह भदौरिया एवं श्रीमती पुष्पा भदौरिया की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे समय–समय पर प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन देकर कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने मामाजी श्री रविन्द्र प्रताप सिंह चौहान (एडवोकेट) एवं श्रीमती स्नेहलता चौहान की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध प्रबंध के इस महत्वपूर्ण कार्य के लायक बनाया और उन्हीं के सम्पूर्ण समपर्ण से मैं आज इस प्रबंध कार्य को सफल बनाने की सीढ़ी तक पहुँच पाई हूं मैं उनका कोटि–कोटि आभार व्यक्त करती हूं।

मैं अपने बेटे अवतंस राठौर का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ कि उसने अपने बचपन के अमूल्य वात्सल्य क्षणों में से मुझे अपने से दूर रख कर पूर्ण जिम्मेदारी से इस कार्य को सहयोग प्रदान किया।

स्वच्छ, सुन्दर व स्पष्ट प्रस्तुतीकरण शोध प्रबन्ध का महत्वपूर्ण भाग होता है। अतः प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को उत्तम रूप से प्रस्तुत करने हेतु मैं न्यू लिखार कम्प्यूटर्स, नया बाजार, लश्कर, ग्वालियर के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ।

साथ ही मैं उन समस्त महानुभावों का जिन्होने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे शोध कार्य पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया, इनके प्रति मैं हृदय से अत्यंत आभार व्यक्त करती हूँ।

शोधार्थी

Jherh 'ky tk jkBkj

ikDdFku

रंग सार्वभौमिक तथा सर्वप्रिय होते हैं। प्रकृति ने अपने परिवेश को विभिन्न रंगों से संजोया है, रंगों की यह विभिन्नता मानव में भी परिलक्षित होती है। प्रत्येक व्यक्ति की रंग के विषय में अपनी राय होती है। व्यक्ति रंगों द्वारा प्रभावित होता है कितना? प्रायः हम इसे पूरा समझ नहीं पाते। रंग हमारे जीवन के सभी पहलुओं से बहुत नजदीक से जुड़ा है। यदि कोई रंग किसी व्यक्ति को पसंद है तो वहीं रंग दूसरे व्यक्ति को नापसंद, जो रंग एक व्यक्ति को पसंद है और जिसे वह प्राथमिकता देता है वही उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करेगा। रंग व्यक्ति को शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक दशाओं को बदलने में सहायक है।

रंग आपके खूबसूरत व्यक्तित्व का दर्पण ही नहीं सुरूचि और सलीकेपन का प्रतीक तथा आपकी पहचान के साधन और माध्यम भी है। रंगों से जुड़कर एक ओर जहां आपका व्यक्तित्व बाहरी दुनिया में निर्णायक मोड़ लेता है, वहीं दूसरी ओर उसके माध्यम से आपका भीतरी संसार भी परिभाषित होता है। यही कारण है कि बहुधंधी क्षेत्रों में व्यस्त तथा सफलतम व्यक्ति रंगों का चुनाव विल्कुल ऐसे करते हैं जैसे किसी अपने मित्र का चयन।

v/;k; iFke e प्रस्तावना के अन्तर्गत रंग, आयु, लिंग, तथा जन्मक्रम एवं व्यक्तित्व से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई है।

v/;k; f}rh;– इस अध्याय के अन्तर्गत शोध अध्ययन के उद्देश्य एवं महत्व की विवेचना की गयी है।

v/;k; r`rh; – शोध अध्ययन के द्वितीय शोध के रूप में यथा संभव साहित्य का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया गया है। जिसके अन्तर्गत वर्ष 2016 तक के शोध कार्यो की समीक्षा एवं संकलन किया गया है।

v/;k; prFk – इस अध्याय के अन्तर्गत शोध पद्धति का उल्लेख किया गया है।

v/;k; ipe – इस अध्याय में आंकड़ों का विश्लेषण कर परिकल्पना को ध्यान में रखकर कुल 39 तालिकाओं का निर्माण किया गया है। जिसमें आवश्यकतानुसार तथ्यों का विश्लेषण उनकी विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु परीक्षणों का उपयोग किया गया है।

v/;k; "k"Ve & इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा प्राप्त परिणामों की विवेचना की गयी है व पूर्व में हुये शोध कार्यो से उन्हें समन्वित करने का प्रयास किया गया है।

v/;k; lIre – शोध समाप्ति के बाद शोधार्थी द्वारा प्राप्त निष्कर्षो को इस अध्याय में संकलित किया गया है व संक्षिप्त रूप में सम्पूर्ण शोध का सार तत्व वर्णित हैं।

v/;k; v"Ve & इस अध्याय के अंतर्गत जिस उद्देश्य को लेकर शोध कार्य प्रारम्भ किया गया था उसकी पूर्ति हेतु शोध के आधार पर सुझाव एवं व्यवहारिक उपादेयता प्रस्तुत की गयी है।

अंत में विषय से संबंधित संदर्भ गन्थ सूची एवं परिशिष्ट को सम्मलित किया गया है।

Jherh 'kyt jkBkj

•••